



“शाहजहाँपुर जिले में बदलते कृषि प्रतिरूप एवं कृषक आय पर उसका प्रभाव: एक भौगोलिक विश्लेषण”

नीतू¹

¹शोधार्थी, भूगोल विभाग, गांधी फ़ैज-ए-आम पी.जी. कॉलेज, शाहजहाँपुर
उत्तर प्रदेश

Email. Id: nsingh42240@gmail.com

शोध सार

कृषि भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है तथा कृषकों की आय, रोजगार और ग्रामीण जीवन-स्तर पर कृषि प्रतिरूप में होने वाले परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उत्तर प्रदेश का शाहजहाँपुर जिला कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ तथा विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ कृषि गतिविधियों को प्रभावित करती हैं। पिछले कुछ वर्षों में जिले के कृषि प्रतिरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले हैं। पारंपरिक खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ गन्ना, आलू, तिलहन, सब्जियों तथा अन्य अपेक्षाकृत अधिक बाजारोन्मुख फसलों का महत्व बढ़ा है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शाहजहाँपुर जिले में बदलते कृषि प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण करना तथा इसके कृषक आय पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। कृषि क्षेत्रफल, उत्पादन, उत्पादकता, फसल विविधीकरण, सिंचाई, कृषि लागत तथा अनुमानित कृषक आय जैसे संकेतकों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि फसल विविधीकरण और बाजारोन्मुख कृषि ने अनेक कृषकों के लिए आय के नए अवसर उत्पन्न किए हैं, किंतु बढ़ती कृषि लागत, मूल्य अस्थिरता, छोटे जोत आकार, विपणन संबंधी समस्याएँ तथा जल संसाधनों पर दबाव कृषक आय की स्थिरता के लिए चुनौती बने हुए हैं। अध्ययन निष्कर्ष देता है कि वैज्ञानिक कृषि तकनीक, फसल विविधीकरण, प्रसंस्करण, बेहतर विपणन व्यवस्था, सिंचाई प्रबंधन तथा किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करके कृषक आय में अधिक स्थायी वृद्धि की जा सकती है।

कूटशब्द: कृषि प्रतिरूप, कृषक आय, फसल विविधीकरण, कृषि भूगोल, सिंचाई, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश.



प्रस्तावना

कृषि किसी भी ग्रामीण क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना को निर्धारित करने वाली प्रमुख गतिविधि है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि केवल खाद्य उत्पादन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण रोजगार, आय, स्थानीय बाजार, औद्योगिक कच्चे माल तथा सामाजिक संरचना से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। कृषि क्षेत्र में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव ग्रामीण जनसंख्या की आजीविका, जीवन-स्तर और क्षेत्रीय विकास पर दिखाई देता है। बदलती तकनीक, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, बाजार की मांग, सरकारी कृषि नीतियाँ, जलवायु परिवर्तन, कृषि लागत तथा किसानों की लाभ संबंधी अपेक्षाएँ कृषि प्रतिरूप को लगातार प्रभावित कर रही हैं। कृषि प्रतिरूप से आशय किसी क्षेत्र में विभिन्न फसलों के क्षेत्रफल, उत्पादन तथा उनके स्थानिक वितरण से है। किसी जिले में फसल प्रतिरूप स्थिर नहीं रहता बल्कि प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों के प्रभाव से समय के साथ परिवर्तित होता रहता है। जलवायु, मिट्टी, स्थलाकृति, जल उपलब्धता तथा सिंचाई जैसी भौतिक परिस्थितियों के साथ-साथ बाजार, परिवहन, कृषि तकनीक, पूंजी, श्रम और सरकारी नीतियाँ फसल चयन को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से सिंचाई सुविधाओं के विस्तार ने उन क्षेत्रों में भी फसल विविधीकरण को संभव बनाया है जहाँ पहले कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर थी।

शाहजहाँपुर जिला उत्तर प्रदेश के मध्य-पश्चिमी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण कृषि क्षेत्र है। जिले की अर्थव्यवस्था में कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। यहाँ विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ, सिंचाई सुविधाएँ तथा अनुकूल कृषि परिस्थितियाँ अनेक फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करती हैं। गेहूँ, धान, गन्ना, आलू, तिलहन तथा दलहन जैसी फसलें जिले के कृषि प्रतिरूप का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। कृषि क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन और बाजार की बढ़ती भूमिका के कारण कृषकों द्वारा पारंपरिक फसल प्रणाली के साथ-साथ व्यावसायिक एवं उच्च मूल्य वाली फसलों को अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

कृषि प्रतिरूप में बदलाव का सीधा संबंध कृषक आय से है। यदि किसान ऐसी फसलों की ओर स्थानांतरित होते हैं जिनकी बाजार मांग और प्रति इकाई लाभ अधिक है, तो उनकी सकल कृषि आय में वृद्धि हो सकती है। दूसरी ओर, अधिक लागत, बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव, उत्पादन जोखिम और प्राकृतिक आपदाएँ वास्तविक शुद्ध आय को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए केवल फसल क्षेत्रफल में परिवर्तन का अध्ययन पर्याप्त नहीं है इसके साथ उत्पादन लागत, उत्पादकता, बाजार मूल्य और प्रति हेक्टेयर आय को भी समझना आवश्यक है।

वर्तमान अध्ययन इसी संदर्भ में शाहजहाँपुर जिले में बदलते कृषि प्रतिरूप और कृषक आय के बीच संबंध का भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि जिले में किन फसलों का महत्व बढ़ा है, किन फसलों का क्षेत्र घटा है, फसल विविधीकरण किस प्रकार विकसित हुआ है तथा इन परिवर्तनों ने कृषक आय को किस सीमा तक प्रभावित किया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

शाहजहाँपुर उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण कृषि जिलों में से एक है। यह क्षेत्र गंगा के मैदान से संबंधित जलोढ़ मैदान का हिस्सा है। जिले की भौगोलिक स्थिति, मिट्टी, जल संसाधन और सिंचाई सुविधाएँ कृषि विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। जिले में समतल स्थलाकृति पाई जाती है, जिसके कारण कृषि भूमि का व्यापक उपयोग संभव है। जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में मानसूनी वर्षा के साथ-साथ नलकूप, नहर और अन्य सिंचाई साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सिंचाई सुविधाओं के विस्तार से किसानों को एक से अधिक फसलें लेने की संभावना प्राप्त हुई है। इससे पारंपरिक एकल फसल प्रणाली की तुलना में अधिक गहन कृषि तथा फसल विविधीकरण को बढ़ावा मिला है। शाहजहाँपुर में खाद्यान्न फसलों के साथ गन्ना और अन्य व्यावसायिक फसलों का भी महत्व है। गेहूँ एवं धान जैसी फसलें खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, जबकि गन्ना और कुछ अन्य नकदी फसलें बाजार आधारित आय का महत्वपूर्ण स्रोत बनती हैं। इसके अतिरिक्त सब्जी, आलू तथा तिलहन जैसी फसलों की खेती भी स्थानीय कृषि अर्थव्यवस्था को विविधता प्रदान करती है।



स्रोत: जिला प्रशासन, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश मानचित्र को शोध प्रयोजन हेतु अनुकूलित।



अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. शाहजहाँपुर जिले में कृषि प्रतिरूप में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
2. प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता में परिवर्तन का विश्लेषण करना।
3. फसल विविधीकरण की प्रवृत्ति एवं उसके भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन करना।
4. बदलते कृषि प्रतिरूप के कृषक आय पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
5. कृषक आय में स्थायी वृद्धि के लिए उपयुक्त कृषि एवं क्षेत्रीय विकास संबंधी सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़े कृषि विभाग, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, जनगणना रिपोर्ट, उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि संबंधी प्रकाशनों तथा अन्य प्रकाशित स्रोतों से प्राप्त किए जा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर कृषकों से संरचित प्रश्नावली एवं अनौपचारिक साक्षात्कार के माध्यम से कृषि क्षेत्रफल, फसल चयन, उत्पादन लागत, बिक्री मूल्य, सिंचाई, बाजार तथा कृषि आय से संबंधित जानकारी एकत्र की जा सकती है। अध्ययन में प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल और उत्पादन की तुलना विभिन्न कृषि वर्षों के बीच की गई है। फसल प्रतिरूप में परिवर्तन को प्रतिशत परिवर्तन के आधार पर समझा गया है। फसल विविधीकरण को खाद्यान्न एवं गैर-खाद्यान्न/नकदी फसलों के क्षेत्रफल में परिवर्तन के माध्यम से देखा गया है। कृषक आय के विश्लेषण में प्रति हेक्टेयर उत्पादन, बाजार मूल्य, कुल लागत तथा अनुमानित शुद्ध आय को प्रमुख संकेतक माना गया है।

फसल प्रतिरूप में परिवर्तन के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है—

प्रतिशत परिवर्तन = (वर्तमान वर्ष का क्षेत्रफल — आधार वर्ष का क्षेत्रफल) / आधार वर्ष का क्षेत्रफल, × 100

इसी प्रकार अनुमानित शुद्ध कृषि आय—

शुद्ध आय = सकल कृषि आय — कुल कृषि लागत के आधार पर निर्धारित की जा सकती है। अध्ययन में तालिकीय विश्लेषण के साथ बार ग्राफ, पाई चार्ट तथा तुलनात्मक आरेखों का उपयोग किया गया है। इससे कृषि प्रतिरूप और कृषक आय में परिवर्तन को सरल एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

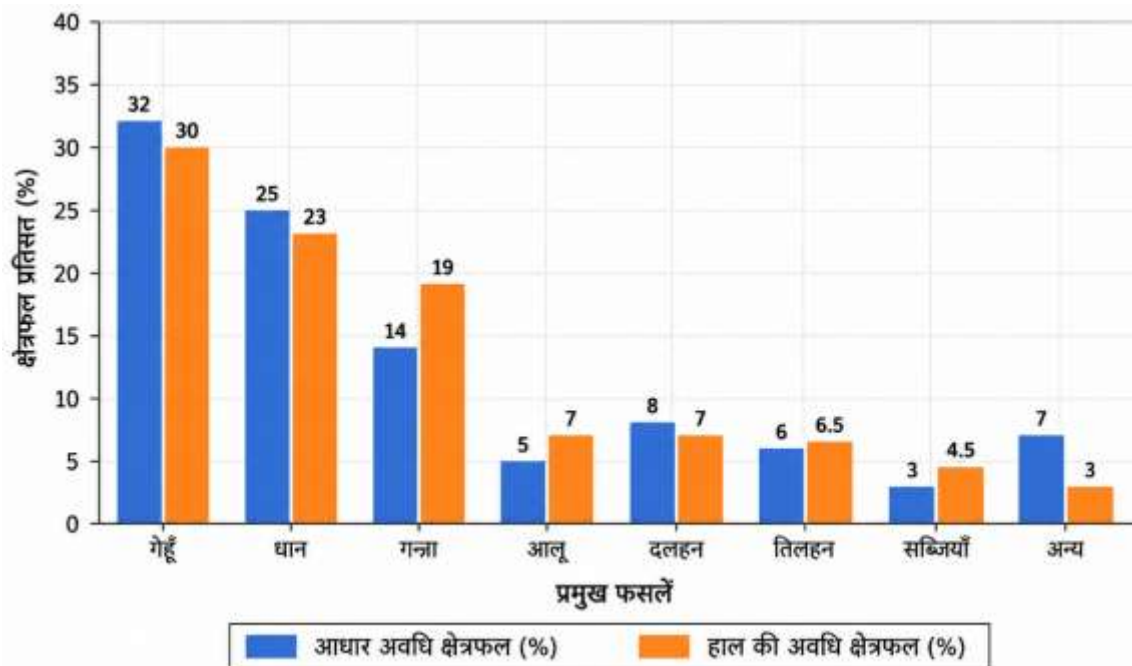
शाहजहाँपुर जिले में बदलता कृषि प्रतिरूप

शाहजहाँपुर के कृषि प्रतिरूप में समय के साथ विविध प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। खाद्यान्न फसलें अभी भी कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन बाजार आधारित कृषि के विस्तार के साथ नकदी एवं उच्च मूल्य वाली फसलों का महत्व बढ़ा है।

तालिका 1: प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल में अनुमानित परिवर्तन

फसल	आधार अवधि क्षेत्रफल (%)	हाल की अवधि क्षेत्रफल (%)	परिवर्तन की प्रवृत्ति
गेहूँ	32.0	30.0	कमी
धान	25.0	23.0	कमी
गन्ना	14.0	19.0	वृद्धि
आलू	5.0	7.0	वृद्धि
दलहन	8.0	7.0	हल्की कमी
तिलहन	6.0	6.5	हल्की वृद्धि
सब्जियाँ	3.0	4.5	वृद्धि
अन्य	7.0	3.0	परिवर्तन

तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में गेहूँ और धान का महत्व अभी भी अधिक है, किंतु इनके सापेक्ष क्षेत्रफल में कमी की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इसके विपरीत गन्ना, आलू और सब्जियों जैसी बाजारोन्मुख फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि दिखाई देती है। इसका प्रमुख कारण बाजार मांग, सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता, अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक लाभ तथा स्थानीय प्रसंस्करण एवं विपणन व्यवस्था हो सकता है।



चित्र 2: प्रमुख फसलों के क्षेत्रफल में परिवर्तन का बार ग्राफ

खाद्यान्न एवं नगदी फसलों में परिवर्तन

शाहजहाँपुर की कृषि अर्थव्यवस्था में गेहूँ और धान जैसी खाद्यान्न फसलों का पारंपरिक महत्व बना हुआ है। ये फसलें खाद्य सुरक्षा तथा स्थानीय उपभोग की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण हैं। हालांकि बाजार आधारित कृषि के विस्तार के साथ गन्ने और अन्य व्यावसायिक फसलों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है। गन्ने की खेती में वृद्धि को कई कारकों से जोड़ा जा सकता है। सिंचाई की उपलब्धता, बाजार की मांग तथा चीनी उद्योग से संबंधित विपणन व्यवस्था किसानों को इस फसल की ओर आकर्षित करती है। हालांकि गन्ने की उत्पादन अवधि अपेक्षाकृत लंबी होती है और भुगतान में देरी होने पर कृषकों की नकदी प्रवाह संबंधी समस्या बढ़ सकती है।

दूसरी ओर आलू एवं सब्जियों जैसी फसलें कम अवधि में अधिक आर्थिक प्रतिफल प्रदान कर सकती हैं। इन फसलों का उत्पादन बाजार मूल्य पर अत्यधिक निर्भर रहता है। इसलिए उच्च मूल्य प्राप्त होने पर कृषक आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है, जबकि कीमतों में गिरावट होने पर आर्थिक जोखिम भी बढ़ जाता है।

फसल विविधीकरण और कृषक आय

फसल विविधीकरण कृषि क्षेत्र में जोखिम कम करने और आय के नए स्रोत विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। यदि किसान केवल एक या दो फसलों पर निर्भर रहता है, तो उत्पादन या बाजार संबंधी समस्या की स्थिति में उसकी पूरी कृषि आय प्रभावित हो सकती है। इसके विपरीत विविध फसलों का उत्पादन कृषि जोखिम को विभाजित करता है।

तालिका 2: चयनित फसलों की अनुमानित लागत एवं आय

फसल	अनुमानित लागत (₹/हेक्टेयर)	सकल आय (₹/हेक्टेयर)	अनुमानित शुद्ध आय (₹/हेक्टेयर)
गेहूँ	55,000	82,000	27,000
धान	60,000	88,000	28,000
गन्ना	95,000	1,45,000	50,000
आलू	1,10,000	1,65,000	55,000
तिलहन	45,000	70,000	25,000
सब्जियाँ	90,000	1,55,000	65,000

तालिका से संकेत मिलता है कि अधिक बाजारोन्मुख फसलों में प्रति हेक्टेयर सकल एवं शुद्ध आय अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है। विशेष रूप से सब्जियों और आलू में उच्च आय की संभावना दिखाई देती है। हालांकि इन फसलों की लागत और मूल्य जोखिम भी अधिक है। गन्ना अपेक्षाकृत स्थिर बाजार उपलब्ध कराता है, लेकिन इसकी लंबी उत्पादन अवधि किसानों की पूंजी को लंबे समय तक कृषि गतिविधि में बाँधे रखती है।

कृषि प्रतिरूप परिवर्तन के कृषक आय पर प्रभाव

कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन का कृषक आय पर प्रभाव बहुआयामी है। एक ओर उच्च मूल्य वाली फसलों के विस्तार से प्रति इकाई भूमि आय बढ़ सकती है, वहीं दूसरी ओर उत्पादन लागत में वृद्धि वास्तविक लाभ को सीमित कर सकती है। पहला महत्वपूर्ण प्रभाव प्रति हेक्टेयर आय में वृद्धि से संबंधित है। बाजार की मांग के अनुसार फसल चयन करने वाले किसानों को पारंपरिक खाद्यान्न फसलों की तुलना में कुछ व्यावसायिक फसलों से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। दूसरा प्रभाव कृषि जोखिम पर पड़ता है। विविधीकरण से किसी एक फसल पर निर्भरता कम होती है। यदि एक फसल का बाजार मूल्य कम हो जाए, तो दूसरी फसल से प्राप्त आय किसान को आर्थिक नुकसान से आंशिक रूप से बचा सकती है। तीसरा प्रभाव कृषि लागत से संबंधित



है। उन्नत बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई, मशीनरी तथा श्रम लागत में वृद्धि के कारण सकल आय बढ़ने के बावजूद शुद्ध आय में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो सकती। चौथा महत्वपूर्ण प्रभाव बाजार एवं मूल्य अस्थिरता है। सब्जी, आलू और अन्य जल्दी खराब होने वाली फसलों के मामले में किसान को बाजार मूल्य में अचानक गिरावट का सामना करना पड़ सकता है। ऐसी स्थिति में उत्पादन अच्छा होने के बावजूद कृषक आय कम हो सकती है। पाँचवाँ प्रभाव सिंचाई और प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता है। अधिक सिंचाई की आवश्यकता वाली फसलों के विस्तार से जल संसाधनों पर दबाव बढ़ सकता है। इसलिए कृषि विविधीकरण को जल-संरक्षण आधारित कृषि रणनीति से जोड़ना आवश्यक है।

कृषक आय को प्रभावित करने वाले प्रमुख भौगोलिक एवं आर्थिक कारक

शाहजहाँपुर जिले में कृषक आय केवल फसल प्रतिरूप से निर्धारित नहीं होती बल्कि अनेक कारक इसके साथ जुड़े हैं।

भूमि जोत का आकार: छोटे एवं सीमांत किसानों के पास कृषि भूमि कम होने के कारण उत्पादन का पैमाना छोटा रहता है। उन्हें मशीनरी, भंडारण और बाजार तक पहुँच में भी अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सिंचाई: सिंचाई कृषि गहनता एवं फसल विविधीकरण का महत्वपूर्ण आधार है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाएँ बेहतर हैं, वहाँ किसान वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाने में सक्षम होते हैं।

बाजार की उपलब्धता: स्थानीय मंडी, परिवहन और प्रसंस्करण केंद्रों की निकटता किसानों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने में सहायक होती है। बाजार से दूरी बढ़ने पर परिवहन लागत बढ़ सकती है और किसान को स्थानीय बिचौलियों पर निर्भर होना पड़ सकता है।

कृषि तकनीक: उन्नत बीज, यंत्रीकरण, सूक्ष्म सिंचाई, मृदा परीक्षण तथा वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों से उत्पादन एवं उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है।

कृषि मूल्य: कृषक आय का एक महत्वपूर्ण निर्धारक फसल का बाजार मूल्य है। उत्पादन बढ़ने के बावजूद यदि बाजार मूल्य कम हो जाए, तो किसानों की वास्तविक आय प्रभावित हो सकती है।

परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शाहजहाँपुर जिले का कृषि प्रतिरूप स्थिर न होकर लगातार परिवर्तनशील है। पारंपरिक खाद्यान्न फसलों के साथ व्यावसायिक एवं उच्च मूल्य वाली फसलों का महत्व बढ़ रहा है। इस परिवर्तन के पीछे सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, बाजार की मांग, कृषि तकनीक, सरकारी प्रोत्साहन तथा किसानों की आय बढ़ाने की आवश्यकता प्रमुख कारक हैं।



फसल विविधीकरण ने किसानों को आय के वैकल्पिक स्रोत प्रदान किए हैं। गन्ना, आलू और सब्जियों जैसी फसलों में अपेक्षाकृत अधिक आर्थिक प्रतिफल की संभावना है। लेकिन उच्च आय की संभावना के साथ उत्पादन लागत और बाजार जोखिम भी बढ़ता है। इसलिए कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन को केवल क्षेत्रफल की वृद्धि के आधार पर सकारात्मक नहीं माना जा सकता। वास्तविक प्रभाव का मूल्यांकन शुद्ध आय, उत्पादन लागत, बाजार मूल्य और जोखिम को शामिल करके करना आवश्यक है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि छोटे एवं सीमांत किसान कृषि परिवर्तन से समान रूप से लाभान्वित नहीं होते। जिन किसानों के पास सिंचाई, पूंजी, भंडारण और बाजार की बेहतर पहुँच है, वे अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसके विपरीत छोटे किसानों के लिए उच्च लागत वाली फसलों में निवेश करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। इसलिए शाहजहाँपुर में कृषि विकास के लिए ऐसी रणनीति आवश्यक है जिसमें उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ लागत कम करने, बाजार जोखिम घटाने और किसानों को बेहतर मूल्य उपलब्ध कराने पर ध्यान दिया जाए।

निष्कर्ष एवं सुझाव

शाहजहाँपुर जिले में कृषि प्रतिरूप में हो रहा परिवर्तन क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है। खाद्यान्न फसलों के साथ गन्ना, आलू, तिलहन एवं सब्जियों जैसी बाजारोन्मुख फसलों का महत्व बढ़ रहा है। इस परिवर्तन से कृषि विविधीकरण को बढ़ावा मिला है और अनेक कृषकों के लिए प्रति इकाई भूमि अधिक आय प्राप्त करने की संभावनाएँ विकसित हुई हैं। हालांकि बढ़ती उत्पादन लागत, बाजार मूल्य में अस्थिरता, छोटे एवं सीमांत जोत, सिंचाई पर निर्भरता तथा विपणन संबंधी समस्याएँ कृषक आय की स्थिरता को प्रभावित कर रही हैं। अतः कृषक आय बढ़ाने के लिए केवल अधिक उत्पादन पर निर्भर रहने के बजाय समग्र कृषि विकास दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। किसानों को फसल विविधीकरण के साथ-साथ मृदा स्वास्थ्य, जल संरक्षण, उन्नत बीज, जैविक एवं समेकित कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर भंडारण, शीतगृह, प्रसंस्करण इकाइयों और बेहतर परिवहन व्यवस्था का विकास किया जाना चाहिए ताकि किसानों को फसल का बेहतर मूल्य मिल सके। किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करके सामूहिक विपणन और इनपुट खरीद की व्यवस्था विकसित की जा सकती है। इसी प्रकार डिजिटल कृषि सेवाओं और बाजार मूल्य की वास्तविक समय जानकारी किसानों तक पहुँचाना उपयोगी होगा। दीर्घकाल में कृषि विविधीकरण को जल-संरक्षण और जलवायु-अनुकूल कृषि के साथ जोड़ना शाहजहाँपुर में कृषक आय की स्थिरता तथा ग्रामीण आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होगा।



संदर्भ सूची

1. बी, एन., एवं रहमान, एफ. (2019)। शाहजहाँपुर जिले, उत्तर प्रदेश में फसल प्रतिरूप में परिवर्तन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जियोग्राफी, जियोलॉजी एंड एनवायरनमेंट, 1(1), 41–47।
2. रहमान, एफ., एवं बी, एन. (2019)। शाहजहाँपुर जिले, उत्तर प्रदेश में गन्ना उत्पादन की प्रवृत्ति एवं प्रतिरूप एक भौगोलिक विश्लेषण। इकोनॉमिक अफेयर्स, 64(3), 537–545। <https://doi-org/10-30954/0424&2513-3-2019-9>
3. खानम, आर., भादुड़ी, डी., एवं नायक, ए. के. (2018)। फसल विविधीकरण कृषकों की आय दोगुनी करने का एक महत्वपूर्ण उपाय। इंडियन फार्मिंग, 68(1), 31–32।
4. सिंह, एस., जोन्स, ए. डी., डीफ्रीज, आर. एस., एवं जैन, एम. (2020)। भारत में फसल एवं आय विविधता तथा कृषक परिवारों के आहार–विविधता के बीच संबंध। फूड सिक्योरिटी, 12, 369–390। <https://doi-org/10-1007/s12571&020&01012&3>
5. बख्शी, ए. (2022)। कृषक परिवारों की स्थिति आकलन सर्वेक्षण 2019 एक सांख्यिकीय टिप्पणी। रिव्यू ऑफ एग्रेरियन स्टडीज, 11(2)।
6. जोशी, ए., प्रजापति, वी. एस., प्रिया, ए., एवं द्विवेदी, आर. (2025)। जलवायु परिवर्तन एवं कृषि व्यवहार शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में एक अन्वेषणात्मक अध्ययन। रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, 19, 15–24।
7. सैनी, एस. (2021)। कृषक आय बढ़ाने के लिए फसल विविधीकरण आवश्यक। द फाइनेंशियल एक्सप्रेस।